अपनी खबर - पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

'अपनी खबर' पांडेय बेचन शर्मा उग्र की सन् १९६० में प्रकाशित हिन्दी की एक विशिष्ट आत्मकथा है । लेखक अपनी आत्मकथा के पंद्रह आध्यायों में अपने जीवन के इक्कीस वर्षो की कथा कहते है । इस आत्मकथा के माध्यम से लेखक ने अपने तथा ओरो के सही रूप को पहचानने की कोशिश की है । लेखक मनुष्य और मनुष्य के भीतर छिये पशु को भी पहचानना चाहता है ।

बेचन का व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य में नग्न यथार्थ चित्रण एवं विशिष्ट शैली के कारण विवाद का विषय रहा । इनके साहित्य को घासलेटी कहकर कुछ लोगों ने आन्दोलन भी चलाया था । उग्र ने अपने स्वभाववश इस विरोध को महत्व नहीं दिया ।

उग्र के जीवन में दुःख जन्म से ही आरम्भ होता है । इनके एक दर्जन भाई बहनों में

से कुछ तो जन्मते ही मर जाते या कुछ की जन्म के बाद मृत्यु हो जाती। अपने जन्म के समय परिवार में आनंद नहीं था एवं जन्मते ही बेच दिये जाने की कथा को वे इस प्रकार कहते हैं–'मैं कहीं दिवंगत अंग्रेजों की राह न लगूँ। अतः तय यह पाया कि पहले तो मेरी जन्म-कुण्डली न बनायी जाय, साथ ही जन्मते ही मुझे बेच दिया जाय।' सो जन्मते ही मुझे यारों ने बेच डाला और किस किमत पर? महज टके पर एक। उसका भी गुड़ मँगा कर मेरी माँ ने खा लिया था। अपने पल्ले उस टके में से एक छदाम नहीं पड़ा था, जो मेरे जीवन का सम्पूर्ण दाम था। अलबत्ता 'जन्मजात बिका' का बिल्ला-जैसा नाम तौक की तरह गले मढा गया, बेचन।

उग्र को बचपन में पिता की मृत्यु और गरीबी के कारण अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। बड़े भाई के अत्याचार से तंग मझले भाई के साथ रामलीला मंडली में शामिल हो गये। इस मंडली के बुरे कामों को निकट से देखा। बचपन में ही आदर्शों को इसे एवं मंडली में व्यभिचार को भड़ते भी देखा था। ऐसे व्यभिचारी परिवेश में रहकर वे भी कम उम्र में ही इश्क करने लगे थे। बारह वर्ष की उम्र में सत्रह वर्ष की सुन्दर लड़की से प्यार करने लगे थे। वे अपनी आत्मकथा में लिखते है—मेरा ख्याल है, इश्क क्या है इसका पता मुझे मण्डली में बारह साल की वय में लग गया था। बारह साल की उम्र में मैं सत्रह साल की एक अभिरामा श्यामा पर आशिक हो गया था कि सीने में जैसे कोई दिल को मला करे है का अनुभव मुझे तभी हो गया था।

ब्राह्मणों के घर में पैदा होने पर भी उग्र अपने को शूद्र घोषित करते है । अपने को शूद्र कहना एवं ब्राह्मण होने का विरोध इस बात को स्पष्ट करता है कि उन्होंने ब्राह्मणों के कुल में बूरे काम होते देखे थे । वे लिखते हैं—

''मैं यह कहना चाहता था कि आज भी मैं निस्संकोच शूद्र हूँ और ब्राह्मणों के घर में पैदा होने के सबब साधारण नहीं असाधारण शूद्र हूँ

हिन्दी साहित्य में लेखक ने जीवन की शुरूआत 'उग्र' उपनाम से की । अंग्रेज हुकूमत के सामने अपने विरोध को उग्र नाम से सूचित किया । उग्र की रचनाओं में विद्रोह की

चिनगारिया थी परन्तु व्यवहारिक स्तर पर कायर थे एवं इस कमजोरी का स्वीकार भी करते थे । वे अपनी आत्मकथा में लिखते है –

"कलम से लिखकर रिश्क लेना हो तो (कायर होते हुए भी) शहीदों का पीछा में काले कोसों तक न छोड़ूँ। कलम से मारना हो तो सारे विश्व के अनाचारियाँ को बिना नरक भेजे मैं न मानूँ लेकिन बन्दूक तलवार से प्राण लेना हो तो वह मेरे सेवा नहीं ।

उग्र की इस आत्मकथा के विषय में पंकज चतुर्वेदी का कहना है कि–"मेरी समझ से अपनी खबर का सबसे ज्यादा महत्व यह देखने में है कि कैसे–कैसे अपनी जिन्दगी के अभावों तथा अपने परिवेश की विसंगतियों से घिरा और उनसे उबरने की छरपटाहाट से भरा हुआ मनुष्य अपने व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास करता चलता है । यह कितना मुश्किल और आश्चर्यजनक, दिलचस्प और मार्मिक एक साथ है । इस आत्मकथा के विशेष संदर्भ में मैं इसे जीवन का सनसनीखेज सौन्दर्य कहना चाहूँगा ।

अपने जीवन के सत्य को कहने के साहस के अभाव में हिन्दी साहित्य में आत्मकथा की समृद्ध परम्परा नहीं मिलती । उग्र की आत्मकथा इस साहस का परिणाम है । हास्य-व्यंग्य से युक्त विशिष्ट शैली में लिखी गई हिन्दी की सशक्त आत्मकथा है ।

II पेपर

हिन्दी साहित्य

एकांकी

8/8/2023

द्वितीय प्रश्न पत्र एकांकी

एकांकी का सामान्य परिचय :- देखा जाये तो मनुष्य मनोरंजन प्रिय है। पर मनोरंजन के लिए उसके पास समय नहीं है। वह कम से कम समय में व अधिक से अधिक मनोरंजन चाहता है। मानव की ऐसी आवश्यकता की पुर्ति के लिए कहानि एंव एकांकी का जन्म हुआ। आज के मानव के पास कतना समय है कि वह विस्तृत उपन्यास महाकाव्य या नाटक का अध्ययन करे। इसी कारण आज के युग में उपन्यास की अपेक्षा कहानी, महाकाव्य की उपेक्षा मुक्तक की नाटकों की अपेक्षा, एकांकी का विकास हुआ।

एकांकी शब्द की उत्पति :- एक + अंक = एकांकी से बना हुआ अर्थात एक अंक वाले नाटक को एकांकी कहते है। एकांकी साहित्य का ऐसा नाटक प्रधान रूप है। जिसके माध्यम से मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक कार्य, एक दृश्य, एक परिस्थिति, एक भाव की ऐसी कलात्मक व्यजना की जाती है कि वह एक अभिव्यक्त भाव से अनेक की सहानुभूति सद्भावना व आत्मीयता प्राप्त कर लेती है।

एकांकी का लक्ष्य पाठक या दृश्य का अनुरंजन करने के साथ-साथ मानव जीवन के किसी एक मार्मिक तथ्य एक पक्षिय रूप से उदाहरण करना। इस प्रकार एकांकी दृश्य काव्य की एक ऐसी लघु विधा है जिसमें एक घटना या भावना जनित संवेदना की अभिव्यक्ति संघर्ष के सहारे इस प्रकार की जाती है कि उसमे प्रभाव एकांकी ऐसा उद्भेद होता है जिससे दृश्क या पाठक की ध्वन्यात्मक भावना झनकृत हो उठती है।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर एकांकी :=>

(i) एकांकी में संवेदना का चित्रण होता है
(ii) एकांकी की घटना का आधार मानव जीवन की दैनिक घटनाओं से लिया जाता है घटना का दैनिक जीवन से संबंध होने के कारण उसमें यथार्थता एवं मनोरंजन दोनों का समावेश हो जाता है
(iii) एकांकी में एक ही अंक होता है
(iv) जीवन से निकटता बनाए रखना एवं स्वभाविकता के लिए संकलन त्रय (घटना, समय, स्थल) का एकांकी और पर्याप्त स्थान दीया जाता है
(v) कथा वस्तु में कौतुहल, जिज्ञासा, गति तीव्रता अनिवार्य है
(vi) एकांकी का विकास कौतुहल वर्धक नाटकीय शैली में कीया जाता है
(vii) संघर्ष एकांकी की आत्मा है अत: उसमे बाहरी या आन्तरिक आवश्यक भावी है
(viii) एकांकी का लक्ष्य एक होता है
(ix) एकांकी में भावुकता की अपेक्षा बौधिकता का आधिक्य होता है
(x) इसकी समाप्ति पर प्रायः कीसी रहस्य का उद्घाटन होता है
(xi) एकांकी का अंत नाटकीय एवं चमत्कारी होता है

=> डॉ रामकुमार के अनुसार एकांकी के आवश्यक तत्व :=>

(i) एकांकी में एक ही घटना होती है
(ii) ये घटना कौतुहल संचयी करती हुई चरम सीमा पर पहुचाती है
(iii) घटना में अप्रधान प्रसंग के लिए कोई स्थान नही है
(iv) पात्र सीमित तथा कथा से सुसंद होते है

(5) विस्तार के अभाव में प्रत्येक घटना कली की भांती खिलकर पुष्प की भांति विकसित होती है।
(6) घटनाओं में अनुपात अनिवार्य है।
(7) चरम सीमा के पश्चात एकांकी का अन्त होना उचित है।

⇒ एकांकी के प्रमुख तत्व होता है :⇒ (i) कथावस्तु
(ii) पात्र एवं चरित्र चित्रण
(iii) कथोपकथन एवं संवाद शैली
(iv) शैली
(v) देशकाल वातावरण
(vi) अभिनेयता
(vii) उद्देश्य

एकांकी

प्रथम एकांकी

उत्सर्ग (त्याग)

एकांकीकार → डॉ. रामकुमार वर्मा

जीवन परिचय :→

(i) रामकुमार वर्मा का जन्म 15 नवम्बर 1905 ई. में हुआ था। मृत्यु 1990 ई. में हुई थी।

(ii) इन्होंने प्रयागराज विश्वविद्यालय से 1929 ई. में प्रथम श्रेणी में हिन्दी से M.A. की उपाधि प्राप्त की थी।

(iii) 1940 ई. में हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास ग्रन्थ पर इनको नागपुर विश्वविद्यालय से P.h.d. की उपाधि प्राप्त हुई।

(iv) 1948 ई. में शिक्षा निदेशक के पद पर कार्य किया।

(v) 1959 ई. विभागाध्यक्ष का पद भी प्राप्त हुआ।

(vi) इन्होंने मास्को एवं श्री लंका में भी अध्यापन कार्य किया।

(vii) 26 जनवरी 1963 ई. को इन्हें भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया।

उनकी प्रमुख रचनाएं :→ (i) एकांकी संग्रह :→ पृथ्वीराज की आँखें, मधुर पंख, रेशमी टाई, चारुमित्रा, मेरे सर्वश्रेष्ठ एकांकी, अमृत की खोज, कैसर का हैं

⟹ चार ऐतिहासिक एकांकी :→

(i) दीपदान
(ii) रूपरेखा
(iii) कौमुदी महोत्सव
(iv) रजत रश्मी
(v) ऋतुराज
(vi) इन्द्र धनुष
(vii) ललित एकांकी
(viii) बहुरंगी एकांकी

(एपसाइस्त)

पत्र => (कैपसाउंस्न)

एकांकी नम्बर -1.

उत्सर्ग =>

एकांकी के पात्र :=>

(i) डॉ शेखर :=> एक महान वैज्ञानिक
(ii) रविनाथ :=> डॉ शेखर का सहायक
(iii) छायादेवी :=> डॉ शेखर की उपेक्षित प्रेमिका
(iv) मंजुला :=> डॉ शेखर की पुत्री
(v) सुधीर :=> डॉ शेखर का सेवक

परिचय :=> डॉ रामकुमार वर्मा कवि नाटक का प्रसिद्ध एकांकीकार भी है, हिन्दी साहित्य के एक आलोचक भी प्रसिद्ध है। इन्हें नाट्य समीक्षा सर्जन एकांकीकार की प्रसिद्ध प्राप्त हुई है। डॉ रामकुमार वर्मा को हिन्दी एकांकी का जनक भी माना गया है। इन्होंने तीन प्रकार की एकांकी लिखे हैं। (1) सामाजिक (2) ~~धार्मिक~~ ऐतिहासिक (3) उमा विनीत भक्ति

7/2/8/2023

प्रश्न 1. एकांकी के तथ्यों के आधार पर "उत्सर्ग" एकांकी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर → (1) कथावस्तु :→

'उत्सर्ग' एकांकी में डॉ रामकुमार वर्मा ने वैज्ञानिक आविष्कार की प्रष्ठ भूमि पर एक ऐसा कथानक की सृष्टि की है जिसमें वैज्ञानिक आविष्कार पर प्रेम की जीत दिखलाई गई है। एकांकी के प्रमुख पात्र डॉ शेखर द्वारा एक ऐसे वैज्ञानिक यंत्र की खोज की जाती है। जिस यंत्र का नाम → 'उपराहस' जिसके माध्यम से मृत आत्माओं से सदैव भुलाकर उनसे सबके सामने बात कर सकते हैं। डॉ शेखर की प्रेमिका (छाया) की मृत्यु इसलिए हो गई थी कि शेखर अपने मित्र की विधवा पत्नी और उनकी पुत्री की सेवा में लगा रहता था। जिसके कारण वह अपनी प्रेमिका (छाया) से विवाह नहीं कर सकता था।

वही मृत (छाया) की आत्मा यंत्र के द्वारा आवाहन करने के कारण उसके समक्ष शरीर धारण कर उपस्थित होती है। वह मांग करती है कि डॉ शेखर अपनी इस वैज्ञानिक यंत्र को नष्ट कर दें। तभी उनके मित्र की पुत्री मंजुल के जीवन की रक्षा हो सकती है। इसके साथ ही वह मृत्यु के पार झांकने का प्रयास ना करें। डॉ शेखर अपने मित्र की पुत्री मंजुल

③ देशकाल व वातावरण :⇒

को अपनी पुत्री मानकर अत्यधिक प्यार करता है। इस कारण वह मंजुल के प्राणों के लिए अपने नवीन वैज्ञानिक को नष्ट कर देता है।
कथानक का आरम्भ जिज्ञासा एवं कौतूहल से आरम्भ होकर। रोचकता के साथ आगे बढ़ता रहता है।

ii) अतः कथावस्तु की दृष्टि से यह एक सफल एकांकी है।

(2) कथोपकथन (संवाद) :⇒ संवाद एकांकी का प्राण होता है। क्योंकि इसके माध्यम से कथा का विकास होता है और पात्रो के चरित्रो पर प्रकाश डाला जाता है। 'उत्सर्ग' एकांकी के संवाद स्वाभाविक, सरल और सहज है। उनमे मनोवैज्ञानिकता, गतिशीलता, विलक्षण अभिव्यंजना शक्ति, और संक्षिप्तता है। वे जहां पाठकों के मन को आकर्षित करने वाले हैं वही उनमें पात्रो में अन्तरगत को अभिव्यक्त करने की क्षमता है।
अतः उत्सर्ग एकांकी कथोपकथन तथ्यों की दृष्टि से एक सफल एकांकी है।

4. भाषा शैली :⇒ डॉ रामकुमार वर्मा ने बड़ी कुशाग्रता के साथ पात्र परिवेश एवं परिस्थिति के अनुकूल भाषा शैली का प्रयोग किया गया है। आलोच्य एकांकी की भाषा सरल, पात्रानुकूल है इसलिए एकांकी ~~की~~ ~~भाषा~~ भाषा के शब्दों में अंग्रेजी

का जहाँ प्रयोग हुआ है वही तत्सम शब्दावली के साथ-साथ देशज भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। शैली की दृष्टि से नाटकीय शैली का प्रचुर प्रयोग हुआ है।
अतः कहा जा सकता है कि आलोच्य एकांकी की भाषा शैली सर्वत्र पात्रों की मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति में सफल रही है। वही सामान्य जीवन के समीप रहती हुई भी सशक्त, सजीव और भावव्यंजक है।

5. उद्देश्य :=> डॉ. वर्मा की उत्सर्ग एकांकी एक उद्देश्य प्रधान रचना है, इस एकांकी ~~अलब्धि एक~~ ~~और जहाँ~~ में यह सम्प्रेषित किया गया है कि वैज्ञानिक उपलब्धि एक ओर जहाँ विशिष्ट है वही अपनों के लिए अपनी इच्छाओं का अपने सपनों का तथा अपनी उपलब्धि का भी त्याग करना पड़ता है। डॉ. शेखर जहाँ अपने मित्र की पुत्री की जीवन रक्षा के लिए अपना अभिनव वैज्ञानिक आविष्कार (यन्त्र) तक को नष्ट कर देता है वही यह भी उद्देश्य रूप में संकेत दिया गया है कि वैज्ञानिक अनुसंधानों में लिन वैज्ञानिक भी भावोचित दायित्वों से दूर नहीं हो सकता तथा वह भी सच्चे नारी का तिरस्कार नहीं कर सकता।

6. निष्कर्ष :- उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ वर्मा की उत्सर्ग एकांकी कला की दृष्टि से एक मात्र सफल एकांकी है इस एकांकी मे प्राय सभी तत्वों का निर्वाह हुआ है। कथानक के अनुसार एकांकी में घटनाक्रम उद्देश्य और चरित्रानुकूल रूप में समाविष्ट किये गये है। एकांकीकार ने सामाजिकता को ध्यान में रखकर इस एकांकी को जीवन्त रचना के रूप में प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है। इसमे प्रसंगवश वैज्ञानिक खोजों की कल्पना भारतीय आत्मदर्शन को आधार मानकर ही की गई है।

हरि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

26/8/2023 Section-C

प्रश्न 5. गद्य की विविध विधाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(i) काव्य में जिस प्रकार कविताओं का महत्व होता है उसी प्रकार साहित्य में गद्य का महत्व होता है। (ii) प्रारम्भिक काल में केवल काव्य रचनाएं ही होती थी। लेकिन समय के आवश्यकता गद्य का विकास होना अति आवश्यक था। (iii) सम्पूर्ण भारत में आजादी की लगाई लड़ी जा रही थी। क्रांतिकारीयों को आपस में सन्देश भेजने की आवश्यकता महसूस हुई।

(iv) इसी दौरान 1850 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का युग प्रारम्भ होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अथक प्रयासों से हिन्दी गद्य का विकास किया।

(v) अन्य भाषाओं से नाटक एकांकीयों का अनुवाद कीया। और स्वयं ने भी नाटकों की रचना की।

निबंध:-

(vi) हिन्दी गद्य के विकास के आरम्भिक चरण में हिन्दी निबंध विधा ने अपना प्रौढ़ रूप या आकार ग्रहण कर लिया था। क्योंकि सर्वप्रथम साहित्य में गद्य के ऐसे स्वरूप की ही आवश्यकता पड़ि थी जिसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कीया जा सके। और जिसमें सहज भावों की भावों के अभिव्यक्ति हो सके।

भारतेन्दु हरिस चन्द्र ने गद्य कला अधिक महत्वपूर्ण महत्व योगदान दिया। वह गद्य की ऐसी विधा है जो मनुष्य के सांस्कृतिक स्तर को प्रतिपादित करती है। कविताओं के बाद यदि कोई विधा है तो निबंध विधा का ही नाम आता है। इसमे आधुनिक युग मे मानवीय जीवन के विविध रूपों का चित्रण करना आसान होता है जितनी मेहनत और तातितम्य निबंधो मे होती है। उतनी अन्य विधा मे नही।

भारतेन्दु हरिसचन्द्र के प्रताप नारायण मिश्र, बाल मुकुन्द गुप्त, आदि मे निबंध साहित्य मे अपना योगदान दिया। इनके बाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ऐसे निबंध कार है इन्होने अपनी पहचान साहित्यिक निबंधो के रचना कार के रूप मे की।

आचार्य शुक्ल के प्रचार हिन्दी निबंध की सैकड़ो धाराये प्रभावित हुई। और निबंध कला को महत्व को प्रकट किया। गद्य मे सबसे अधिक निबंध लिखे गये। निबंध के निम्न तथ्य माने गये है प्रतिपादय निबंध, व्याख्यान वीथी निबंध, आत्म पर्क निबंध और कला कलात्मक निबंध इसी प्रकार निबंधो की शैली भी साहित्य कारो ने प्रस्तुत की है जैसे – व्यास शैली (बड़ा निबंध), समास शैली, विक्षेप शैली, धारा प्रवाह शैली,

निबंध के रूप :-

1. वर्णनात्मक "
2. विवरणात्मक (स्त्री के लिए)
3. विचारात्मक "
4. भावात्मक निबंध

विकास की दृष्टि से हिन्दी निबंध की विकास निम्न काल क्रम अनुसार चार खण्डो मे विभक्त किया है।

(1) भारतेन्दु काल :->

उस समय जो निबंधो की रचना की गई उनमे नव सामाजिक जाग्रति का रूप था। क्योंकि बहुत सारे पत्र-पत्रिकाएं और पाण्डुलिपियां बिखरी पड़ी थी। उनको एकत्रित करके एक व्यापक साहित्यिक समाज की स्थापना की गई जिसमे राजनैतिक जागरूकता, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विषयों को समाहित किया गया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने निबंधो मे व्यंग्यता और लोकोक्ति व मुहावरो का इस्तेमाल करके निबंध रुचि कर और प्रभाव शाली लगे।

बद्रीनारायण प्रेम धन लाल तोता राम अम्बिका दत्त व्यास भाल राधा चरण गोस्वामी इत्यादि निबन्धकारो ने हिन्दी निबंध में योगदान दिया।

(2) द्विवेदी युग :->

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

के सम्पादक कार्य में सरस्वती नामक पत्रिका प्रसादी का सम्पादन हुआ। लगभग २० वर्ष तक इसका सम्पादक कार्य किया। यह ऐसी पत्रिका थी जिसमें साहित्यकारों ने अपने योग्यता अवसर। इसी पत्रिका के आधार पर साहित्यकार प्रसिद्ध होने लगे।
1903 में सरस्वती का सम्पादन अपने हाथ में लेने बाद साहित्य जगत में प्रभाव शाली परिवर्तन होने लगा। इसमें जितने भी रचना छपती थी। उन रचनाओं की बोधगम्य शैली होती थी और परिष्कृत भाषा का प्रयोग होता था। पदम सिंह शर्मा, सरदार पूर्ण सिंह, चन्द्र धर शर्मा गुलेरी, आदि सभी विशिष्ट निबंध कार हो गये।

3. वर्तमान काल या (उत्कर्ष काल):-)

द्विवेदी युग के बाद वर्तमान काल में निबंधों का यह एक उत्कर्ष काल था। इसमें बुद्धी हृदय विषय का सामन्जस्य स्थापित किया गया है। विवेचनात्मक, हास्य व्यंग्य भाषा का प्रयोग किया गया है। हिन्दी में समीक्षात्मक निबंध लिखे गये हैं। प्रसाद, बंध, महादेवी वर्मा जैनेन्द्र आदि संवेदन में रोचक और कृत शैली सभी निबंधों में रचना की।

रेखा चित्र :-)

यह विधा हिन्दी साहित्य में नवीनतम विधा के नाम से जानी जाती है। रेखा चित्र शब्द के लिए शब्द स्केच, शब्दचित्र, व्यक्तिचित्र, तूलिका चित्र और चरित्र लेख आदि के रूपों में जाना जाता है। एक तरह से यह निबंध का ही लघु रूप होता है। संक्षेप में किसी का चरित्र चित्रण करना और शारीरिक बनावट का चित्रण करना जो पाठकों के स्वतः चित में रेखाएं उभर कर आये। उसकी आसान कल्पना हो जाये। ऐसा स्केच चित में बन जाये तो वह रेखा चित्र कहलाता है उभर जाये।

इस विधा में शब्दों के माध्यम से पात्रों के चित्र उकेरे जाते हैं। इसमें चित्रों की पूर्णता न होकर अभिव्यक्ति की पूर्णता होती है। रेखा चित्र एक ऐसी कला है जिसमें प्राचीन काव्य या कवियों का चित्र दिया जाता है। स्थूल और सूक्ष्म दोनों में रेखा चित्र का असमान होता है।

स्थूल => शरीर
सूक्ष्म => आत्मा

लेखन सुधार की आवश्यकता है।

Pramila
13/9/22

डॉ नगेन्द्र के अनुसार रेखा चित्र एक ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होता है जिसमें पाठक के चित्त में रेखाएं उभरती होती तथा मुख्य रूप में उतार-चढ़ाव आते रहे हो रेखा ।

रेखा चित्र के गुण व विशेषताए निम्न प्रकार:-

1. रेखाचित्र गद्य की नूतनतम विधा है।
2. इसमें वर्णविषय के अवलोकन की दृष्टि से बिन्दु का निर्धारण होता है।
3. रेखा चित्र एक पूर्ण चित्र न होकर व्यक्ति वस्तु अथवा घटना का एक निश्चित दृष्टिकोण से प्रस्तुत प्रतिबिम्ब होता है।
4. रेखा चित्र रचना में संकेत सामर्थ्यपूर्ण होते हैं
5. रेखाचित्र के निर्माण के लिए लेखक को गम्भीर अन्तर दृष्टि की अपेक्षा रहती है
6. लेखक रेखाओं से ही चित्र बना डालता है वह रंगों से भरे बिना ही घटनाओं का जाल बुनता और व्यक्ति के स्वरूप को चित्रांकित कर देता है
7. विद्वानो ने रेखा चित्र के लिए चार तत्व निर्धारित किया है

① चित्रात्मकता :-
रेखाचित्र का प्राथमिक और महत्वपूर्ण तत्व चित्रात्मकता, बिम्बात्मकता है यही तत्व रेखा चित्र को अन्य विधाओं से अलग करता है।

② एकात्मकता :-
किसी भी श्रेष्ठ रचना या रेखाचित्र के लिए एकमता का होना अत्यन्त आवश्यक होता है। लेखक का पूरा ध्यान वर्ण्य विषय की ओर ही रहता है इसलिए वह सफल रेखा चित्र रचनाकार बन जाता है।

③ तटस्थता (अलग रहना) :-
एक श्रेष्ठ रेखाचित्र कार सभी क्षेत्रों से तटस्थ रहता है अपने व्यक्तिगत जीवन या घटनाओं से पूर्णतः तटस्थ या अलग रहता है।

④ संक्षिप्तता :-
रेखा चित्र पूर्णतः संक्षिप्त सार गर्भित और व्यास शैली से पर रचना होती है तथा समास शैली का प्रयोग किया जाता है।

रेखा चित्र का उद्भव व विकास :-

① हिन्दी में रेखा चित्र की शुरुआत बनारसी दास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा एवं महादेवी वर्मा से शुरू मानी जाती है।

Date
Page

② बोलती प्रतिमाएं जो श्रीराम की कृति है। 1937 में प्रकाशित हुई।

③ इस कृति में रेखाचित्र कला की झलक मिलती है इसके बाद बनारसीदास चतुर्वेदी तथा महादेवी वर्मा के सस्मरणात्मक रेखाचित्रों का प्रकाशन प्रमुख मंत्र पत्रिकाओं में होने लगा था।

④ रामा, बिंधा, सभीया, बिंदो, गीसा, आदि रचनाओं में महादेवी वर्मा ने रेखा चित्र शैली का प्रयोग किया है।

⑤ इसके अतिरिक्त अतित के चलचित्र (1941) स्मृति की रेखाएँ (1947) पथ के साथी (1956), और स्मारिका (1971) में प्रकाशित हुए हैं।

⑥ शिवपूजन साहनेवी रेखा चित्र शैली में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

⑦ जगदीश चन्द्र माथुर ने 1971 में 2 संग्रह लिखे। ① दस तस्वीरें और ② जिनहोंने जिना जाना

⑧ भगवती चरण वर्मा ने भी अपनी कृति साहित्य की सिद्धान्त व कथा रूप में रेखा चित्रात्मक निबंधों की रचना की।

⑨ इस प्रकार रेखा चित्र कला में बहुत से विद्वानों ने योगदान दिया। लेकिन

महादेवी वर्मा ने रेखा चित्रात्मक गद्य रचनाए की।

कहानी का उद्भव व विकास :-

① हिन्दी गद्य परम्परा में कहानी एक प्रभावशाली विधा है। हिन्दी गद्य विकास के साथ ही से हिन्दी कहानी का विकास भी होने लगा था।

② कहानी की परिभाषा विद्वानो ने अलग-अलग दी है। हडसन के अनुसार:- लघु कथा में केवल एक ही मुलभाव होता है उस मुल भाव का विकास तार्किक निष्कर्षो के साथ लक्ष्य की एक निश्चता से सरल स्वाभाविक गति से होता है।

③ कहानी एक घुड़दोड़ के समान है जिसका आदि अन्त ही महत्वपूर्ण होता है।

④ इस प्रकार कह सकते है कि यह एक ऐसी रचना है जिसमे जीवन के किसी एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

⑤ इसमे चरित्र का उद्देश्य चरित्र की उच्चता भावो पवित्रता तथा आनंद की अनुभूति इसमे बनी रहती है।

⑥ कहानी के विकास को हम ~~तीन~~ चार भागो में बाटते है।

प्रथम
① चरण:-
इस काल में हिन्दी विकास गद्य का विकास हो गया। और प्रथम कहानी रानी केतकी की कहानी। इसके लेखक इनसाअल्लाखान थे। राजा भोज का सपना, श्री शिव प्रसाद सितारे हिन्द इस काल में भारतेन्दु किशोरी लाल गोस्वामी, गिरजालाल गोस्वामी, आदि प्रमुख कहानी कार थे।

② द्वितीय चरण:-
इस काल को जयशंकर प्रसाद युग भी कहा जाता है। इस समय छोटी छोटी कहानीया लिखी गई और प्रसाद को ही मूल आधार माने जाते है। आकाशदीप, पुरस्कार, प्रतीध्वनी आदि इनकी प्रसिद्ध कहानीया थी।

इस काल के मुख्य लेखकों मे जयशंकर प्रसाद विस्मभर नाथ, बेचनशर्मा उग्र, पेमचन्द, राय कृष्ण दास, राय कुसुम दास, आदि प्रमुख कहानी कार है।

③ तृतीय चरण:-
जैनेन्द्र इस काल के प्रमुख लेखक माने जाते हैं, पाजेब, खेल, अपत्नी, मास्टर जी, एक रात, आक्रोश, कोठरी की बात, जुआरी, आदि प्रमुख कहानीया लिखी गई। अज्ञेय, जैनेन्द्र, इलास जोशी, भगोती चरण वर्मा, विष्णु करकाकर आदि

प्रमुख कहानीकार थे।

चौथा चरण:-

इस काल को नई कहानी के नाम से भी जाना जाता है मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, कमलेश्वर, राजेन्द्र वर्मा, निर्मल वर्मा, मनु भण्डार, उषा प्रियंवदा आदि प्रमुख कहानीकार थे।

कहानियों में जैसे-जैसे गद्य का विकास हुआ वैसे-वैसे कहानियों का प्रभाव, उद्देश्य, विशेषताएं निर्धारित होने लगी। समाज की बहुत सारी कमियों को दूर करने में इनका संयोग रहा है प्रेमचन्द, यशपाल, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि सभी ने शिल्प की दृष्टि से कहानी को नया रूप दिया है।

कहानी के तत्व 7

① कथातत्व, चरित्र-चित्रण, संवाद, योजना, देशकाल वातावरण, उद्देश्य, शैली शिल्प

संस्मरण:-

संस्मरण आधुनिक गद्य विधा का एक प्रकार है इसमें लेखक आत्म चरित्र भावों को मौलिक रूप प्रदान करता है अर्थात समाज में घटित घटनाओं का स्मरण करके मौलिक रूप प्रदान करता है।

डॉ नगेन्द्र के अनुसार संस्मरण में केवल

उच्य चुने हुए कुछ घटनाओं का वर्णन होता है ये घटनाए वे होती है जिनसे लेखक प्रभावित होता है। स्मरण के तत्व कभी कहानी के समान होते है।

स्मरण की कुछ विशेषताए :-
पवित्र स्मृती, महान व्यक्तित्व, संवेदनात्मकचित्रण, यथार्थता, व्यक्तिकता और भाषात्मकता का माधुर्य स्मरण में होता है। स्मरणों की रेखाए अतीत के चल चित्र पथ के साथी मिट्टी की सुगंध, गेहू व गुलाब, भुलेहुए चेहरे, दीप जले शंख बजे आदि प्रमुख स्मरण है।

इसी तरह रिपोर्ताज यात्रावतांत, आत्मकथा, जिवनी, आदि सभी गद्य की विभिन्न विधाए है।

एकांकी -> एक ही घटना में हो जाती है। [एक ही अंक होते है] एक साहित्य की रचना होती है।

नाटक -> इसमें सभी तरह के नाटक होते है
चार प्रकार के नाटक होते है
इसमें नायक -नायिका का वर्णन भी आता है

30/08/2023

प्रश्न, नाटक एकांकी के उद्भव व विकास को समझाइए।

उत्तर हिन्दी गद्य परम्परा में एकांकी का विकास चीर पुरातन काल से किसी ना किसी रूप में देखने को मिलता है वैदिक काल में इनको अलग नामो से जाना जाता था। जैसे- सामवेद के गीत और संगीत यजुर्वेद के अभिनय और अथर्ववेद में भी नाटक कई नाम रूप विद्यमान थे।

हिन्दी में सर्वप्रथम एकांकी नाटको का रूप भारतेन्दु युग में हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विषस्य विषम औषधम, अंधेरी नगरी धन जय विजय नीत देवी वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति आदि पूर्ण रूप से अनुदित और स्वरचित एकांकियों के रूप थे। भारतेन्दु ने इनकी रचना संस्कृत नाटको के रूप में की थी।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद अनेक एकांकीकारो व नाटककारो ने सामाजिक विसंगतियों पर आधारित एकांकीयो की रचना की जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटको के साथ हिन्दी नाट्य कला में अपना अहम स्थान बनाया।

6/1/2024 (1942) पाठ-5 (अदम्य जीवन) (रिपोर्ताज)
(रांगेय राघव)

अवतरण :- युग-युग तक संसार को याद रखना पड़ेगा कि एक दिन मनुष्य के स्वार्थ और असामर्थ्य के कारण लोगो ने उसे पूरी शक्ति के साथ कुचल डाला था। पर मानवता जीवित रहना चाहती थी उसे कोई मिटा नहीं सकता।

प्रसंग :- प्रस्तुत "अदम्य जीवन" शीर्षक रिपोर्ताज से अवतरित है। इस अंश में रिपोर्ताज लेखक "रांगेय राघव" ने सन 1942 में बंगाल में पड़े अकाल से त्रस्त हुए वहां के लोगो की संघर्ष चेतना का वर्णन कर मानवीय संवेदन व्यक्त की है।

व्याख्या :- लेखक का मानना है कि केवल सीरीसदिरगंज की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण बंगाल में अकाल के कारण हुई मोतो से धरती कबरो से भर उठी थी इस भयंकर घटना को संसार युग-युग तक याद रखेगा और इस बात को सोचने के लिए मजबूर हो उठेगा की कैसे किस प्रकार दुर्भिक्ष काल में स्वार्थी भावना आर्थिक विषमता, गुलामी और साम्राज्यवाद की आंधी के कारण बंगाल के लोगो को अपनी

हरी-भरी भूमि पर उसे भूमि मुख से

लेकिन पर्णीय बात यह है कि इस प्राकृतिक आपदा में भी वहाँ के लोगो ने अपनी अदम्य जीवन शक्ति का परिचय दिया उस आपदा को झेला ताकि मानवता जीवित रहे। अतः बंगाल भाइयों ने उस काल में उस जीवन में आदम्य जीवन इच्छा का परिचय दिया। उनकी जीवनता को कोई नहीं मिटा सकता

विशेष :=>

(i) अकाल की कठिन परिस्थिति में बंगाल वासियों ने अपने अदम्य जीवन शक्ति का परिचय इस दृष्टि से दिया की जिससे ताकि मानवता जीवित रह सके। लेखक ने इसी स्थिति को संदेश दिया।

(ii) अवतरण की भाषा सरल तथा शैली भावात्मक है।

अवतरण - 2

मैं देख रहा था, जिनके शरीर में केवल हड्डियाँ ही शेष थी। आज भी उनमें जीवित रहने का साहस था। अकाल आया, बीमारी आयी। आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार उन्हें निचोड़ रहा है, किन्तु यह तो अभी तक अदम्य आकर्षण है।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश डॉ "रांगेय राघव" द्वारा रिपोर्ताज "अदम्य जीवन" शीर्षक से उद्धृत है। इसमें भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व के अकाल ग्रस्त बंगाल के एक गाँव सोनाडिंगा की विचलित स्थितियों का चित्रण करते हुए वहाँ के लोगों की अदम्य जीविकता का अंकन किया गया।

व्याख्या :=> राघेय राघव अपने एक मित्र के साथ अकाल के समय बंगाल की एक गाँव की अकाल ग्रसित ग्रस्ति स्थितियो का निरूपण करने जाते हैं वहाँ की दरिद्र पीड़ित स्थितियों को देखकर भी उन्होंने वहाँ की जनता में जीवित रहने की इच्छा और उसके लिए किये जा रहे प्रयत्नों को देखा। तब उन्हें लगा कि वहाँ के ऐसे लोग जो केवल

हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गये थे वे भी जीवित रहने के लिए काम करने मे जुट गये है बंगाल मे अकाल दो बार आया वहाँ की जनता की जीवित रहने का प्रयास उससे दम नही सका। वहाँ की जनता रक्त से आपेह्लावित भी एक दिन विजेता आक्रमण कायो ने इनको कुचला था। और आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार इन्हे निचोड़ रहा है उनके साहस को चुनौती दे रहा है फिर भी यह कोम आज भी अभी तक अदम्य है क्योंकि जिस जाति मे इतना अटूट साहस हो उसे कोन दबा सकता है कोन जीत सकता है कोई भी नही।

विशेष :-

(i) बंगाल की साहसी प्रजा का चित्र अंकित किया गया है

(ii) उस समय व्यापारियों ने अपने स्वार्थ सिद्धी के लिए अनाज के भण्डार भर लिए थे। लेखक ने उस प्रपात को ही भीषण व्यापार कहा है

(iii) भाषा मे ओज व चित्रात्मकता है

प्रश्न - 1 रांघेय राघव के रिपोर्ताज "अदम्य जीवन" के आधार पर बंगाल के अकाल के दुरदशा पूर्ण चित्रण को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर अदम्य जीवन रांघेय राघव की चर्चित कृति "तुफानो के बीच" से अवतरित रिपोर्ताज है। इसमे लेखक ने आजादी से पूर्व पड़े अकाल और उससे त्रस्त बंगाल के एक गाव की दुरदशा का चित्रण किया है। लेखक अपने चिकित्सक मित्र के साथ अकाल ग्रस्त गाव की यात्रा करता है। वहां जो दृश्य देखता है वे दिल को देहलाने वाले तो है ही मानवता की सामुहिक मौत को भी व्यक्त करते है। प्रस्तुत रिपोर्ताज में बंगाल के अकाल में दुरदशा का चित्रण यथार्थ शब्दावली में किया गया।

बंगाल के अकाल का दुदर्शा पूर्ण चित्रण :-

लेखक रांघेव राघव अपने चिकित्सक मित्र भरन्टा चार्या के साथ अकाल ग्रस्त बंगाल के एक गाँव मे पहुंचते है। वहां गाँव मे पहुँचते ही वहां उनकी आँखों में निराशा व भय के बादल छा जाते है। लेखन ने लिखा है कि गाव नही मरघट गया था "मै नही समझ सका की क्या यही गाँव है मैने कहा कि यह तो

मेरी मा एक दैहक मात्रक है। लेखक ने यह सदैरूनि दिये कि गाव मे आदमी के दर्शन कम और कबरो के दर्शन ज्यादा होते है।
जैसे ही यह लोग वहाँ पहुचे तो हर कदम पर आदमी दिखे या नही दिखे पर एक कबर अवश्य दिख जाती थी लेखक को सामने एक घर टूटा हु घर दिखाई देता है। केला के पेडो की शीतल छाया मे 14 कबर एक साथ मिली। वहाँ किसी छोटे बच्चे ने बताया की एक-एक कबर मे दो-दो, तीन-तीन सब एक साथ रखे गये है। इस स्थिति से लेखक और उनके मित्र करूणा पूर्ण हृदय से बिलख उठते है

बेदुरदर्शी देख कर लेखक सोचता है कि गाँव के लिए कुछ करना चाहिए। मेहाचार्य जी (मित्र) लेखक से अनुरोध करते है कि हम चाहते है कि यहाँ की एक-एक कबर से बात करो और हिन्दुस्तान के कोने-कोने मे जा कर कहो कि जिस हाथ के ममल एक दिन सहसांह पहनते थे। आज वहाँ जुलाहे चुहो की तरह मर रहे है।

छोटी-छोटी पगडंडीयो से कबरो को पार करते हुए। जैसे ही लेखक अपने साथी के साथ आगे बढ़ता है, उन्हे एक बृध

दिखाई देता है। लेखक को परिचय कराके अपना परिचय देते हैं। वृद्ध इन्हें अकाल की छाया से पीड़ित गाँव की स्थिती से अवगत कराता है। वृद्ध मित्र आत्मीक संगति से अवगत कराता है। वह सिन्धु सभ्यता अनुसार है।

(i) वृद्ध बतलाता है कि पहले तो यहाँ आक्रमण होते रहे। फिर ये अकाल पड़ गया। इसलिये हमारा जीवन नष्ट हो चुका है। और कुछ भी नहीं बचा है।

(ii) अकाल के भयंकर काली छाया से तथा बिमारी से यहाँ के सैकड़ों लोग काल के ग्रास बन गये। पर किसी ने जनधन की सुरक्षा का उपाय करने की नहीं सोची।

(iii) बुजुर्ग ने बतलाया कि यहाँ कब्रों की कोई कमी नहीं है। सामने खोई हुई मिट्टी के कब्रे पाँच सौ से कम नहीं है। और एक कब्र में एक आदमी से मृत रसाह हो सकते हैं। कुछ अकाल से मरे तो कुछ बिमारी से और जो बचे नदी की धारा बहा ले गई।

(iv) बात चीत के दौरान पता लगा कि वहाँ एक रहमत नाम का व्यक्ति था। जो इस बात की गवाही दी कि इस गाँव में बहुत लोग मरे हैं और उसके परिवार के 25 में से 20 सदस्य मर गये।

उसने लेखक को यह भी बताया कि अब यहाँ ना कुछ खाने को है और नाहि जीवन बिताने का कोई अन्य साधन ही बचा है। अगर बचा है तो यह तम्बाकु है जिसे धुओं के रूप में हम उगलते रहते हैं एक और खास बात पता लगी। हुआ यह कि गाँव के दुकान स्कूल ही कितनी ही खराब हो गई। कितने ही लोग मारे गये हो। लेकिन लोग अभी दुर्घटना का सामना करने के लिए तैयार हैं रहमत ने बताया कि गाँव में अकाल की बीमारी तो है ही इसके अतिरिक्त मलेरिया, चेचक, चनरूप आदि भी फैले हुआ है

15) उस भीड़ में अब्दुल रहमान व्यक्ति भी था। जिसने बताया कि 16 व्यक्तियों के परिवार में वह अकेला बचा है। उसने यह भी बताया है कि अब उसका घर भी नही बचा है। रहमत और अब्दुल से यह पता चला कि घर में माँ व ससुर के अलावा कुछ नही बचा है। खाने को भी कुछ भी नही है। गाँव के लोग महगा होने से चावल भी नही खरीद पा रहे हैं। पैसे उधार करके वे एक वक्त का भोजन कर रहे हैं। कुछ लोगों का कहना है कि चावल के महगा होने से वे सकरकंद खा कर काम चला रहे हैं

(6) अकाल की भयावहता के परिणाम स्वरूप गांव में कपड़ा भी उपलब्ध नहीं था। लेखक ने बताया की कपड़ों की अब क्या कीमत होगी कि जो इंसान कपड़े बनाने में सबसे आगे थे वहां के निवासी अब नंगे होकर जीवन बिता रहे हैं।

(7) गांव की यात्रा करने पर लोगों की बातचीत पर सोमा एवं एक लड़के के कथनों से पता लगा की यहां की मानवीय भावनाएं कठोर हो गई। समूचा गाव दुर्दशा से ग्रस्त है यह दुर्दशा अकल्पनीय एवं [illegible] विद्रोह है। इस अकाल से पहले है कितने भी इंसान की जाने गए हो किन्तु अभी भी यहा जीविनिय शक्ति आत्मसम्मान बाकी है।

⇒ लेखक ने घ की स्थिति का वर्णन करते हुआ लिखा है कि अधिकतर घरों की टिने उखड़ गयी थी और न जाने कितनों ने भूख से लड़ने के लिए अपनी टीने बेच दी थी। जो टीने दिखाई दे रही थी। वे उखड़ी - उखड़ी सी थी। इन टिनो के बचे रहने का कारण यह नहीं था कि उनके मालिक उन्हें बेचना नहीं चाहते थे। किन्तु वजह यह नहीं थी कि इन लोगों में इतनी ताकत ही नहीं बची थी कि वे लोग इन टिनों को बाजार

- लेखक ने रिपोर्ताज ने कहा है कि बंगाल का अकाल बड़ा विषम कारुणिक था। अकाल में मनुष्य अपनी भूख से तड़प कर अपनी जान दे चुके थे। लोगों के घर खंडहर हो गये थे। खेतों से जमीन दुख गई थी। नदियाँ लाशों की सड़ांध से अट गई थी किन्तु जो कुछ अच्छा बचा तो वह तो था, मनुष्य का स्वाहास।

भारतीय जीवन में ऐसी साहसिकता और ऐसे जीवन के उदाहरण अन्यत्र मुश्किल देखने को मिलता है इसलिए लेखक ने रिपोर्ताज का लेखक रखा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लेखक ने रिपोर्ताज में गाँव की व्यथा व दुरदशा का चित्रण करे। वहाँ की भुखमरी, मौत बेकारी, व्यवस्था आदि का मार्मिक हृदयहारी एवं चित्रों ग्राम व जीवन चित्र प्रकृति एवं मनुष्य समाज की विडम्बनाओं के साथ प्रस्तुत किया है।

⇒ रिपोर्ताज का तात्पर्य :- अंग्रेजी शब्द रिपोर्ट का का फ्रांसीसी रूपान्तर है।
- रिपोर्ताज सरकारी विभागों में व्यवसाय लोग रिपोर्ट दिया करते हैं। रिपोर्ताज इस रिपोर्ट का साहित्यिक संस्करण कहा जा सकता है। यह हिन्दी गद्य की नवीन विधा है किसी घटना, दुर्घटना, युद्ध, दंगा, बाढ़, भूकम्प, मेला आदि की तथ्यात्मक किन्तु

साहित्यिक भाषा शैली प्रस्तुत रिपोर्ताज रही है।

परिभाषा :- रिपोर्ताज हिन्दी की एक नवीन गद्य विधा है जिसे नवीन विद्वानों ने परिभाषित किये हैं। यहाँ कुछ विद्वानों की परिभाषा दी जा रही है।

डॉ राम विलास शर्मा :- "किसी घटना या घटनाओं का ऐसा वर्णन की वस्तुगत व सत्य पाठक के हृदय को प्रभावित कर सके। रिपोर्ताज कहलायेगा।"

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर :- "रिपोर्ताज घटना का हो दर्शन का हो या मेले उत्सव का हो उसमें जीवन व आनंद का संगम होना चाहिए।"

एक अच्छे रिपोर्ताज की विशेषताएं :- एक अच्छे रिपोर्ताज में प्रमुख रूप से निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए।

i) रिपोर्ताज लेखक घटना या स्थल का प्रत्यक्ष द्रष्टा होता है इसलिए रिपोर्ताज में घटना या स्थिति के पात्रों का सजीव यथार्थ या मानवीय संवेदना जगाने वाला

चित्रण होना चाहिए।

(2) रिपोर्ताज लेखक को घटना सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। तभी वह प्रभावी अभिव्यक्ति और उसका सजीव चित्र प्रस्तुत कर सकता है।

(3) रिपोर्ताज लेखक की भाषा शैली पर भी रचना का आकर्षण निर्भर करता है। इस दृष्टि से वर्णन में सजीवता होनी चाहिए।

(4) रिपोर्ताज की रचना स्वभाविक प्रवाहमय होनी चाहिए। ~~जिससे~~ उसके प्रति उत्सुकता व आकर्षण उत्पन्न हो सके।

(5) रिपोर्ताज का आकार छोटा होना चाहिए। जो एक घटना या एक स्थान तक सीमित हो।

(6) रिपोर्ताज के वर्णन में सजीवता होनी चाहिए।

रांघेय -राघव की लेखन शैली:-

रांघेय -राघव ने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को पर अपनी कुशल लेखनी चलाई है।

"अदम्य जीवन" उनके द्वारा रचित एक श्रेष्ठ रिपोर्ताज है। इस रिपोर्ताज के आधार पर उनकी लेखन शैली इस प्रकार विवेचित की जा सकती है:-

भाषा :-
राघेय-राघव की भाषा परिमार्जित एवं भावों को व्यक्त करने में सक्षम है। उन्होंने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है इस आधार पर रिपोर्ताज में तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों का प्रयोग सहजता के साथ हुआ है।

शैली :⇒
राघेय-राघव हिन्दी गद्य कारों में अपना विशेष स्थान रखते हैं। "अदम्य जीवन" में उन्होंने ~~भू~~ रिपोर्ताज
इस रचना में वर्णात्मक, भावात्मक, अलंकारिक एवं चित्रात्मक शैलियों का प्रयोग हुआ है।

(i) वर्णात्मक शैली :-
"हम पगडंडियों से बढ़ते जा रहे थे। सूर्य आकाश में चढ़ने लगा था। कहीं-कहीं कोई किसान किसी पेड़ की छाया में बैठा दिखाई पड़ता था।"

(ii) भावात्मक शैली :-
"एक दिन विदेशियों ने उन्हें कुचलाता था। आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीख-व्यापार इन्हें निचोड़ रहा है।"

(iii) अलंकारिक शैली :-
"दूर लगभग मील भर की दूरी पर काल बेटी की तरह खड़ा वह लम्बा ताड़ का पेड़।"

आदम्य जीवन - उनके साथ इतना कुछ हो चुका था फिर भी जीने की लालसा थी।

⇒ उपर्युक्त वर्णन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि रांगेय-राघव का "आदम्य जीवन" रिपोर्ताज विधा की एक श्रेष्ठ रचना है। इसमें लेखन की शैली की समस्त विधाएं समस्त हैं।

एकांकी प्रथम एकांकी

उत्सर्ग (त्याग)

एकांकीकार ⇒ डॉ रामकुमार वर्मा

जीवन परिचय :⇒

(i) रामकुमार वर्मा का जन्म 15 नवम्बर 1905 ई. में हुआ था। मृत्यु 1950 ई. में हुई थी।

(ii) इन्होंने प्रयाग राज विश्वविद्यालय से 1929 ई. में प्रथम श्रेणी में हिन्दी से M.A. की उपाधि प्राप्त की थी।

(iii) 1940 ई. में हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास ग्रन्थ पर इनको नागपुर विश्वविद्यालय से Ph.d. की उपाधि प्राप्त हुई।

(iv) 1948 ई. में शिक्षा निर्देशक के पद पर कार्य किया।

(v) 1959 ई. विभागाध्यक्ष का पद भी प्राप्त हुआ।

(vi) इन्होंने मास्को एवं श्री लंका में भी अध्यापन कार्य किया।

(vii) 26 जनवरी 1963 ई. को इन्हें भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ :⇒ (i) एकांकी संग्रह :⇒ पृथ्वीराज की आँखें, मधुर पंख, रेशमी टाई, चारुमित्रा, मेरे सर्वश्रेष्ठ एकांकी, अमृत की खोज, कैलाश का है।

⇒ चार ऐतिहासिक एकांकी :⇒ (i) दीपदान
(ii) कलंक
(iii) समुद्रगुप्त
(iv) रजत रश्मी
(v) ऋतुराज
(vi) इन्द्र धनुष
(vii) नवीन एकांकी
(viii) बहुरंगी एकांकी

(एपराइस)
पात्र => ~~(रूपरचना)~~

एकांकी नम्बर -1.
उत्सर्ग =>

एकांकी के पात्र :→

(i) डॉ शेखर :→ एक महान वैज्ञानिक
(ii) विनय :→ डॉ शेखर का सहायक
(iii) छायादेवी :→ डॉ शेखर की उपेक्षित प्रेमिका
(iv) मन्जुल :→ डॉ शेखर की पुत्री
(v) सुधीर :→ डॉ शेखर का सेवक

परिचय :→ डॉ रामकुमार वर्मा कवि नाटक का प्रसिद्ध एकांकीकार एवं में है, लेकिन साथ ही साथ एक आलोचक भी प्रसिद्ध है। इन्हें नाट्य सृजन एकांकीकार की प्रसिद्धि प्राप्त हुई हैं। डॉ रामकुमार वर्मा को हिन्दी एकांकी का जन्मदाता भी माना जाता है। इन्होंने तीन प्रकार की एकांकी लिखे हैं। (1) सामाजिक (2) ~~धार्मिक~~ ऐतिहासिक (3) ऊर्मा विवृत मक्ति

7/2/8/2023

प्रश्न 1. एकांकी के तत्वों के आधार पर "उत्सर्ग" एकांकी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर → (1) कथावस्तु :-

"उत्सर्ग" एकांकी में डॉ० रामकुमार वर्मा ने वैज्ञानिक आविष्कार की प्रष्ठ भूमि पर एक ऐसा कथानक की सृष्टि की है जिसमें वैज्ञानिक आविष्कार पर प्रेम की जीत दिखलाई गई है। एकांकी के प्रमुख पात्र डॉ शेखर द्वारा एक ऐसे वैज्ञानिक यंत्र की खोज की जाती है। जिस यंत्र का नाम → 'उपराहस्य' जिसके माध्यम से मृत आत्माओं से सदैव बुलाकर उनसे सबके सामने बात कर सकते हैं।

डॉ शेखर की प्रेमिका (छाया) की मृत्यु इसलिए हो गई थी कि शेखर अपने मित्र की विधवा पत्नी और उसकी पुत्री की सेवा में लगा रहता था। जिसके कारण वह अपनी प्रेमिका (छाया) से विवाह नहीं कर सकता था।

वही मृत (छाया) की आत्मा यंत्र के द्वारा आवाहन करने के कारण उसके समक्ष शरीर धारण कर उपस्थित होती है। वह माँग करती है कि डॉ शेखर अपनी इस वैज्ञानिक यंत्र को नष्ट कर दे। तभी उनके मित्र की पुत्री मंजुल के जीवन की रक्षा हो सकती है। इसके साथ ही वह मृत्यु के पार झाँकने का प्रयास न करे।

डॉ शेखर अपने मित्र की पुत्री मंजुल

Date
Page 7

(3) देशकाल व वातावरण :⇒

को अपनी पुत्री मानकर अत्यधिक प्यार करता है। इस कारण वह मंजुल के प्राणों के लिए अपने नवीन वैज्ञानिक को नष्ट कर देता है।
कथानक का आरम्भ जिज्ञासा एवं कौतुहल से आरम्भ होकर। रोचकता के साथ आगे बढ़ता रहता है।

ii) अतः कथावस्तु की दृष्टि से यह एक सफल एकांकी है।

(2) कथोपकथन (संभावाद) :⇒ संवाद एकांकी का प्राण होता है क्योंकि इसके माध्यम से कथा का विकास होता है और पात्रों के चरित्रों पर प्रकाश डाला जाता है। 'उत्सर्ग' एकांकी के संवाद स्वाभाविक, सरल और सहज है। उनमें मनोवैज्ञानिकता, गति शीलता, विलक्षण अभिव्यंजना शक्ति और क्षिप्रता है। वे जहाँ दर्शकों के मन को आकर्षित करने वाले हैं वहीं उनमें पात्रों में अन्तरगत को अभिव्यक्ति करने की क्षमता है।
अतः उत्सर्ग एकांकी कथोप कथन तथ्यों की दृष्टि से एक सफल एकांकी है।

4. भाषा शैली :⇒ डॉ रामकुमार वर्मा ने बड़ी कुशाग्रता के साथ पात्र परिवेश एवं परिस्थिति के अनुकूल भाषा शैली का प्रयोग किया गया है। आलोच्य एकांकी की भाषा सरल, पात्रानुरूप है इसलिए एकांकी ~~की भाषा~~ भाषा के शब्दों में अंग्रेजी

का जहाँ प्रयोग हुआ है वहीं तत्सम शब्दावली के स्थान-स्थान पर अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। शैली की दृष्टि से नाटकीय शैली का बखूबी प्रयोग हुआ है।

अतः कहा जा सकता है कि आलोच्य एकांकी की भाषा शैली सर्वत्र पात्रों की मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति में सफल रही है वहीं सामान्य जीवन के समीप रहती हुई भी सशक्त, सजीव और भावात्मक है।

5. उद्देश्य :=>

डॉ. वर्मा की आसमं एकांकी एक उद्देश्य प्रधान रचना है, इस एकांकी [illegible] और अंत में यह स्पष्ट किया गया है कि वैज्ञानिक उपलब्धि एक ओर जहाँ विशिष्ट है वहीं अपनों के लिए अपनी इच्छाओं का, अपने सपनों का तथा अपनी उपलब्धि का भी त्याग करना पड़ता है। डॉ. शेखर जहाँ अपने मित्र की पुत्री की जीवन रक्षा के लिए अपना अमूल्य वैज्ञानिक आविष्कार रेखा तक को नष्ट कर देता है वहीं यह भी उद्देश्य रूप में संकेत दिया गया है कि वैज्ञानिक अनुसंधानों में लीन वैज्ञानिक भी भावनात्मक दायित्वों से दूर नहीं हो सकता तथा वह भी सच्चे नागरिक का तिरस्कार नहीं कर सकता।

6. निष्कर्ष :- उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ वर्मा की उत्सर्ग एकांकी कला की दृष्टि से एक मात्र सफल एकांकी है इस एकांकी मे प्रायः सभी तत्वों का निर्वाह हुआ है। कथानक के अनुसार एकांकी में घटनाक्रम उद्देश्य और चरित्रानुकूल रूप में समाविष्ट किये गये हैं। एकांकीकार ने सामाजिकता को ध्यान में रखकर इस एकांकी को जीवन्त रचना के रूप में प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है। इसमें प्रसंगवश वैज्ञानिक खोजों की कल्पना भारतीय आत्मदर्शन को आधार मानकर ही की गई है।

पाठ => 2

एकांकी => तौलिये

17/8/2023

एकांकीकार
"उपेन्द्र नाथ (अश्क)"

मुख्य पात्र => बसन्त, मधु (नायक नायिका)
गौण पात्र (सहायक) => सुरो, चिन्नी, मंगला

भावार्थ :- => तौलिये शीर्षक एकांकी उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा रचित है जिसमें तौलिये शीर्षक एकांकी में स्वच्छता की दृष्टि से केन्द्र में रखा गया है एकांकी का सारा घटनाक्रम स्वच्छता की समस्या के इर्द-गिर्द घुमता है एकांकी में मुख्य पात्र (मधु और बसन्त) है इनके माध्यम से एकांकी को गति प्रदान की गई है। मधु व बसन्त दोनों ही तौलिये की के माध्यम से स्वच्छता के लिये लड़ते-झगड़ते रहते हैं मधु एक धनी परिवार से थी वहीं बसंत सामान्य परिवार से था इन दोनों में सोच-विचार का बहुत बड़ा अन्तर था। मधु की सोच उच्च कोटि के साथ-साथ स्वयं को समझाकर दिखाने की भी थी जबकि बसंत सीधे सरल स्वभाव का था तथा किसी विषय के बारे में गहराई से नहीं सोचता था। एकांकी तौलिये के माध्यम से "उपेन्द्र नाथ अश्क" का मानना है कि स्वच्छता प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का हिस्सा होता है पर जब यही आदत अपनी सीमा लांघ जाती है तो हरी-भरी जिन्दगी दाव पर लग जाती है।

Page 11

और जिन्दगी बदलकर कैसे नया रूप ले लेती है यह एकांकीकार ने तौलिये के माध्यम से समझाया है।
इस प्रकार मात्र पांच पात्रों के आधार पर एकांकी का मंचन सफलता पूर्वक किया गया है। बसन्त के चरित्र में अपनापन, आडम्बर, हिंसा तथा प्रेम प्यार भरा पड़ा है। दूसरी ओर मधु दिखावा पसन्द नारी है। उसकी प्रवृति (स्वभाव) सगडालु है।
इस प्रकार एकांकी में पात्र योजना सही व उपर्युक्त है।

प्रश्न [तौलिये एकांकी]

प्रश्न :-> "तौलिये एकांकी आधुनिक परिवेश में पति - पत्नी के सम्बंधों में आने वाले बदलाव (विसंगतियों) का जीवन्त दस्तावेज है" स्पष्ट करते हुये एकांकी की मूल संवेदना के कुछ प्रमुख संदर्भों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर :-> परिचय :-> इस एकांकी के एकांकीकार उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने मध्यवर्गीय परिवार की सामाजिक परिस्थियों को आधार बनाया है एवं एकांकीकार ने दैनिक जीवन में अपनाये जाने वाले विभिन्न बाहरी आडम्बरों को व्यक्त किया है मध्यवर्गीय परिवार अपनी हैसियत से अधिक दिखावा करते है तथा रूढिवादीता प्रिय होते है एकांकीकार ने आडम्बर प्रियता रूढिवादीता एवं दिखावा पसन्द परिवारों पर करारा व्यंग्य इस "तौलिये" एकांकी एकांकीकार ने किया है।

कथानक या कथावस्तु :-> एकांकीकार उपेन्द्र नाथ "अश्क" ने मध्य वर्गी[illegible] के संस्कारों को आधार बना[illegible]ते[illegible]

है मानो वे दैनिक जीवन में बात चीत कर रहे हो। उनके संवाद संक्षिप्त, सार्थक, सजीव अंतर स्वंद्व से पुरित होते है। इस आधार पर देखा जाये तो तौलिये एकाकी के संवाद सभी खरे उतरते है। पात्रो के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। इसलिए बसन्त के संवादो में कहीं-कहीं पर अंग्रेजी भाषा के शब्दो का भी प्रयोग दिखाई पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि तौलिये एकाकी के सम्पूर्ण संवाद सजीव, मार्मिक एवं अन्तर द्वन्द्व का उद्‌घाटन करने में सफल है।

वातावरण या देशकाल :- तौलिये एकाकी में अश्कजी ने वास्तविकता एवं यथार्थ की पूर्णता निकट लाने के लिए इन्होंने कथा वस्तु से सम्बद्ध वातावरण की सृष्टि की है। तभी तो लेखक ने संकेत किया है कि मेज के दूसरी कोने में अंगीठी है लेकिन आग शायद नहीं जलती, क्योंकि अंगीठी का कपड़ा अत्यन्त सुन्दर है और उस पर सजावट की चीजे रखी हुई है, वैसे ही जैसे मध्य वर्गीय घरो में होती है। इस प्रकार के वर्णो के माध्यम से एकाकी कार ने मध्यम वर्गीय समाज के घरो के वातावरण की सृष्टि की है। तौलिये का प्रयोग वातावरण के सृष्टि में सहायक सिद्ध हुआ है। वही उसी और नीमोह, हसी मजाक ने भी वातावरण को स्वाभाविक बनाने में प्राप्ति सहायता प्रदान की है। अतः कहा जा सकता है कि आलोच्य एकाकी देशकाल और वातावरण की खोज एकाकी है।

भाषा शैली -> भाषा शैली के दृष्टि से इस एकाकी को सफल एकाकी कहा जा सकता है। क्योंकि अश्क जी ने यथासम्भव प्रसंगके भाषा का प्रयोग किया है। इसमें पात्र अनुकूलता, मार्मिकता भावाभिव्यञ्जकता का संयोजसहज प्रयोग दिखाई पड़ता है। बसन्त की बोली में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का सहज प्रयोग उसके पात्रानुकूलता को उद्घाटित करता है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा शैली की योजना में अश्क जी पूर्णतया अहस्त एकाकी के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं।

उद्देश्य :->

तौलिये एकाकी अश्क जी की एक उद्देश्य प्रधान रचना है। इसमें एकाकी कार ने एक व्यक्ति की अपनी सुरुचि, सभ्यता, सफाई और शिष्टाचार की सनक के कारण उत्पन्न प्रभावों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है। अश्क जी ने इस एकाकी के उद्देश्य के बारे में स्वयं लिखा भी है- " मुख्य रूप

"मुख्य रूप से तो यह एकाकी सनक की समस्या है लेकिन गौड़ रूप बहुतसी ऐसी बातें हैं, जो सभ्य समाज में मुझे खटकती रहती है। जिसको संकेत करने के माध्यम से मैने एकाकी में किया है। कई बार अपनी सुरुचि सभ्यता और सफाई और शिष्टाचार की सनक के कारण लोग दूसरों की भावना पर किस तरह आघात पहुंचाते है। इसकी ओर भी संकेत मैने करना चाहा है और यह दिखाना चाहा है। यह सुरुचि पसंदी और शिष्टाचार असली संस्कार की तुलना में कितने बनावटी और थोथे दिखते हैं। अतः कहा जा सकता है कि उद्देश्य की दृष्टि से आलोच्य एकाकी एक सफल एकाकी है।